

Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



Research Article

भू-राजनीति से परे: बहु-क्षेत्रीय और असममित युद्ध के युग में कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त की प्रासंगिकता

(Beyond Geopolitics: Relevance of Kautilya's Mandala Siddhanta in the Era of Multi-Domain and Asymmetric Warfare.)

 Dr. Arvind Kumar ^{1*}, Prashant Kumar Pandey ²

¹ Assistant Professor, Dept. of Defence and Strategic Studies, ANDKPG College, Gonda, Uttar Pradesh, India

² Research Scholar, Department of Defence & Strategic Studies, ANDKPG College, Gonda, Uttar Pradesh, India

Corresponding Author: * Dr. Arvind Kumar 

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23275528>

सारांश

21वीं सदी का वैश्विक सुरक्षा ढांचा एक अभूतपूर्व रणनीतिक संक्रमण काल से गुजर रहा है। समकालीन संघर्षों की बहु-आयामी प्रकृति ने थॉमस हॉब्स, हंस जोआचिम मोर्गेथाउ, और केनेथ वाल्ट्ज़ जैसे पश्चिम-केंद्रित यथार्थवादी (Westphalian Realist) सिद्धांतों की सीमाओं को उजागर कर दिया है, जो आज के हाइब्रिड और नेटवर्क-आधारित युद्धों को समझने में संकुचित सिद्ध हो रहे हैं। यह शोध पत्र मिलिट्री साइंस (सैन्य विज्ञान) के दृष्टिकोण से आचार्य कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त (Theory of Circles) और उनके द्वादशराज मण्डल (12 Kings Matrix) का एक अभिनव पुनर्मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। लेख का मुख्य तर्क यह है कि प्राचीन भारतीय सामरिक चिंतन में निहित भौगोलिक संकेंद्रित वृत्त केवल भौतिक सीमाओं तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक मल्टी-डोमेन वॉरफेयर (cyber, space, and information domains) तथा असममित (Asymmetric) युद्ध कला के अदृश्य मोर्चों पर भी पूरी तरह सटीक बैठते हैं। यह शोध यह विश्लेषण करता है कि कैसे तकनीकी एकीकरण और ग्रे-जोन ऑपरेशंस के इस दौर में 'अरि' (शत्रु) और 'मित्र' के पारंपरिक समीकरण बदल चुके हैं, तथा 'उदासीन' (Neutral) एवं 'मध्यम' (Intermediary) राज्यों की भूमिका वैश्विक संतुलन को प्रभावित कर रही है। अंततः, यह पत्र पश्चिमी सिद्धांतों की बाइनरी (द्विध्रुवीय) सोच को चुनौती देते हुए रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) और बहु-संरेखण (Multi-alignment) को समझने के लिए कौटिल्य के मण्डल को एक गतिशील, लचीला और व्यावहारिक 'सामरिक सॉफ्टवेयर' के रूप में स्थापित करता है।

Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 07-08-2026
- Accepted: 05-10-2026
- Published: 10-10-2026
- MRR:4(10); 2026: 55-65
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

How to Cite this Article

Kumar A, Pandey P K. भू-राजनीति से परे: बहु-क्षेत्रीय और असममित युद्ध के युग में कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त की प्रासंगिकता. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):55-65.

Access this Article Online



www.mrrjournal.in

मुख्य शब्द: मण्डल सिद्धान्त, द्वादशराज मण्डल, मल्टी-डोमेन वॉरफेयर, असममित युद्ध, तूष्णीं युद्ध, रणनीतिक स्वायत्तता, हाइब्रिड युद्ध कौशल।

1. प्रस्तावना

वैचारिक शून्यता और कौटिल्य का उदय (Introduction & Strategic Gap)

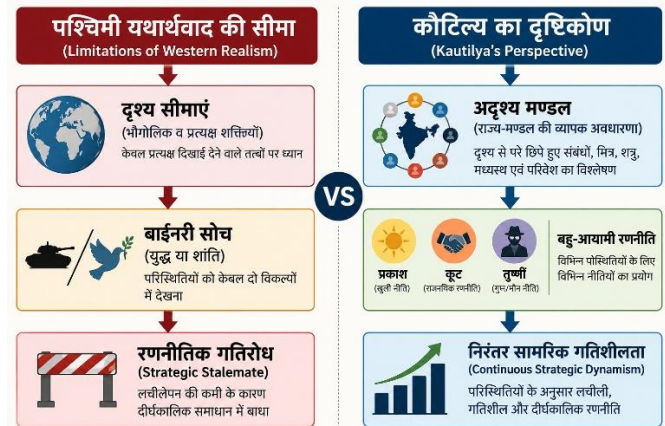
अंतर्राष्ट्रीय संबंधों (International Relations) और सैन्य विज्ञान (Military Science) का समकालीन वैश्विक विमर्श लंबे समय से एक विशेष प्रकार के पश्चिम-केंद्रित वैचारिक आधिपत्य (Eurocentric Hegemonic Discourse) का बंधक रहा है। थॉमस हॉब्स के अराजकतावादी दर्शन से प्रेरित होकर थॉमस मॉर्गेन्थाउ का शास्त्रीय यथार्थवाद (Classical Realism), केनेथ वाल्ट्ज़ का संरचनात्मक नव-यथार्थवाद (Structural Neorealism) और जॉन मियरशाइमर का आक्रामक यथार्थवाद (Offensive Realism) जैसी अवधारणाएं यह मानकर चलती हैं कि वैश्विक व्यवस्था अनिवार्य रूप से एक संप्रभुता-विहीन, अराजक रंगमंच (Anarchic Domain) है। इस व्यवस्था में राज्य केवल अपनी उत्तरजीविता (Survival) और शक्ति-संतुलन (Balance of Power) के लिए एक अनवरत संघर्ष में लिप्त रहते हैं। यह वेस्टफेलियन मॉडल (Westphalian Model) सुरक्षा और संघर्ष को अत्यंत कठोर, द्विध्रुवीय या 'बाइनरी' (Binary) श्रेणियों में विभाजित करता है—या तो दो राष्ट्र पूर्णतः युद्ध (War) की स्थिति में हैं, अथवा वे पूर्णतः शांति (Peace) की अवस्था में हैं।

परंतु, 21वीं सदी के हाइब्रिड (Hybrid), एसिमेट्रिक (Asymmetric) और नेटवर्क-आधारित बहु-आयामी युद्धों ने इस पारंपरिक पश्चिमी चिंतन के वैचारिक खोखलेपन और उसकी व्यावहारिक सीमाओं को पूरी तरह उजागर कर दिया है। आज युद्ध का स्वरूप मौलिक रूप से बदल चुका है। अब दो राष्ट्रों के मध्य बिना किसी औपचारिक युद्ध घोषणा (Formal Declaration of War) के, ग्रे-जोन ऑपरेशंस (Gray-Zone Operations) के माध्यम से दशकों तक एक ऐसा संघर्ष चलता रहता है जो न तो पूर्ण शांति है और न ही पूर्ण युद्ध। पश्चिमी यथार्थवादी सिद्धांत आज की इस गैर-किनेटिक (Non-Kinetic) और अदृश्य युद्ध कला (Invisible Warfare) की सूक्ष्मताओं को समझने में पूरी तरह विफल सिद्ध हुए हैं।

इस विफलता के तीन मुख्य रणनीतिक कारण हैं:

- प्रथम, बाइनरी प्रतिमान का पतन:** पश्चिमी यथार्थवाद आज के 'नो-वॉर, नो-पीस' (न युद्ध, न शांति) के धुंधले परिदृश्य की व्याख्या नहीं कर सकता। आज सैन्य बल का सीधा प्रयोग किए बिना, साइबर स्पेस में वायरस इंजेक्ट करके, क्रिटिकल इकोनॉमिक इंफ्रास्ट्रक्चर को पंगु बनाकर और सूचना तंत्र में दुष्प्रचार (Disinformation Warfare) फैलाकर किसी राष्ट्र को घुटनों पर लाया जा सकता है। पश्चिमी सिद्धांत इस सूक्ष्म आक्रामकता को 'युद्ध' की श्रेणी में रखने से हिचकिचाते हैं।
- द्वितीय, गैर-राज्य अभिनेताओं (Non-State Actors) की रणनीतिक उपेक्षा:** वेस्टफेलियन प्रतिमान केवल संप्रभु राज्यों को ही शक्ति की वैध इकाई मानता है। वह यह समझने में अक्षम है कि कैसे आधुनिक घातक तकनीकों, ड्रोन्स और एनक्रिप्टेड नेटवर्क से लैस होकर हूती विद्रोही, हिजबुल्लाह या वैश्विक तकनीकी कॉर्पोरेशन (जैसे स्पेस-एक्स या एआई संचालित निजी संस्थाएं) किसी पूरे भू-राजनीतिक क्षेत्र का रणनीतिक संतुलन रातों-रात बदल सकते हैं।

- तृतीय, भौतिक भूगोल पर अति-निर्भरता:** पश्चिमी यथार्थवाद राष्ट्रीय सुरक्षा को केवल थल, नभ और जल की दृश्य सीमाओं और बफर स्टेट्स (Buffer States) के संकीर्ण चश्मे से मापता है। वह उस मल्टी-डोमेन वॉरफेयर की जटिलता को नहीं समझ सकता जहाँ स्पेस डोमेन या इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम में लड़ी जा रही एक अदृश्य लड़ाई हजारों मील दूर बैठी किसी शक्ति को सीधे आपके घरेलू मण्डल में एक आक्रामक इकाई के रूप में स्थापित कर देती है।



2.1 वैश्विक राजनीति का संक्रमण काल और मण्डल की रणनीतिक तरलता (Strategic Fluidity & Multi-alignment)

शीतयुद्ध (Cold War) का दौर एक बेहद सरल, वैचारिक रूप से विभाजित और द्विध्रुवीय युग था, जहाँ संपूर्ण विश्व दो स्पष्ट खेमों—अमेरिकी पूंजीवाद और सोवियत साम्यवाद—में बंटा हुआ था। उस दौर में पश्चिमी सिद्धांतकारों के लिए गठबंधनों की भविष्यवाणी करना और सुरक्षा समीकरणों का गणित लगाना सरल था। परंतु सोवियत संघ के पतन के बाद और अमेरिकी आधिपत्य (Unipolar Moment) के क्रमिक क्षरण के उपरांत, वर्तमान वैश्विक व्यवस्था एक अत्यंत जटिल, खंडित और बहुध्रुवीय (Multipolar) एवं बहु-संरेखित (Multi-aligned) युग में प्रवेश कर चुकी है।

आज की वैश्विक राजनीति की सबसे मुख्य और जीवंत विशेषता उसकी रणनीतिक तरलता (Strategic Fluidity) है। समकालीन विश्व में कोई भी सैन्य या कूटनीतिक गठबंधन न तो स्थायी है और न ही निरपेक्ष। उदाहरण के लिए, भारत एक तरफ संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान के साथ क्वाड (QUAD) जैसी रणनीतिक साझेदारी में शामिल होकर इंडो-पैसिफिक में समुद्री सुरक्षा की रूपरेखा तैयार करता है, तो दूसरी तरफ वही भारत, रूस और चीन के साथ ब्रिक्स (BRICS) और शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के मंचों पर बैठकर वैश्विक भू-अर्थशास्त्र (Geo-economics) की नई पटकथा लिखता है। इसी प्रकार, तुर्की जैसे देश नाटो (NATO) के मुख्य स्तंभ होने के बावजूद रूस से S-400 जैसी उन्नत मिसाइल रक्षा प्रणालियां खरीदते हैं और पश्चिमी प्रतिबंधों को धता बताते हैं।

पश्चिमी राजनीतिक दर्शन और रणनीतिक थिंक-टैंक इस प्रकार के 'बहु-संरेखण' को विरोधाभासी, अनैतिक या विशुद्ध अवसरवाद मानते हैं, क्योंकि उनका पूरा वैचारिक ढांचा 'शून्य-योग खेल' (Zero-Sum)

Game) और 'या तो आप हमारे पाले में हैं, या दुश्मन के पाले में' की संकीर्ण जिद्दरूपी सोच पर टिका है।

इसके विपरीत, यही रणनीतिक तरलता और गठबंधनों का लचीलापन आचार्य कौटिल्य के **मण्डल सिद्धान्त (Mandala Siddhanta)** का केंद्रीय प्राण है। कौटिल्य का बारह राजाओं का सामरिक वृत्त (द्वादशराज मण्डल) यह सिद्धान्ततः स्वीकार करके चलता है कि अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में जड़ता (Stagnation) के लिए कोई स्थान नहीं है। मण्डल सिद्धान्त के अनुसार, किसी भी राज्य का मित्र या शत्रु होना उसकी तात्कालिक भौगोलिक स्थिति, उसकी आंतरिक शक्ति और उसके रणनीतिक हितों के अनुसार निरंतर परिवर्तित होता रहता है। कौटिल्य की दृष्टि में, गठबंधनों का स्वरूप एक बहती हुई नदी की तरह गतिशील (Dynamic) होता है, जहाँ आज का 'अरि' (शत्रु) कल का 'मित्र' बन सकता है और आज का 'मित्र' कल का '**पाणिग्राह**' (Parshnigraha) (पीछे का दुश्मन) हो सकता है, बशर्ते कि विजिगीषु के राष्ट्रीय हित इसकी मांग करें। कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त पश्चिमी सिद्धान्तों की तुलना में आज की इस बिखरी हुई, बहुध्रुवीय और अप्रत्याशित दुनिया को कहीं अधिक यथार्थवादी और व्यावहारिक धरातल पर समझाने की क्षमता रखता है।

2.2 शोध का उद्देश्य: (Research Objective)

इस गहन वैचारिक और व्यावहारिक पृष्ठभूमि में, इस शोध पत्र का प्राथमिक उद्देश्य आचार्य कौटिल्य के मण्डल सिद्धान्त को केवल प्राचीन भारतीय इतिहास के एक गौरवशाली अवशेष (Historical Artifact) या संग्रहालय में रखी किसी पांडुलिपि के रूप में देखना मात्र नहीं है। इसके विपरीत, यह शोध पत्र मिलिट्री साइंस (सैन्य विज्ञान) के आधुनिक और व्यावहारिक सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए, मण्डल सिद्धान्त और उसके **द्वादशराज मण्डल** को 21वीं सदी के एक अत्याधुनिक '**सामरिक सॉफ्टवेयर**' (Strategic Software) के रूप में पुनर्जीवित और स्थापित करने का एक ठोस अकादमिक प्रयास है। यह पत्र यह स्थापित करना चाहता है कि कौटिल्य का रणनीतिक दर्शन और उनकी युद्ध-दृष्टि किसी विशेष कालखंड या तकनीक की सीमाओं में बंधी हुई नहीं है। जिस प्रकार एक परिष्कृत आधुनिक कंप्यूटर सॉफ्टवेयर (Operating System) अपनी मूल कोडिंग के बल पर अलग-अलग युग के हार्डवेयर पर पूरी कार्यकुशलता से चल सकता है, ठीक उसी प्रकार कौटिल्य के मण्डल का तार्किक और गणितीय ढांचा

भी मौर्यकालीन रथों, तीरों और हाथियों के भौतिक युग से बाहर निकलकर आज के **हाइपरसोनिक मिसाइलों, स्वायत्त ड्रोन झुंडों (Autonomous Drone Swarms), साइबर स्पेस और बाह्य अंतरिक्ष (Outer Space)** के इस मल्टी-डोमेन युग में भी पूरी तरह क्रियाशील (Operational) और मार्गदर्शक है।

इस शोध का अंतिम लक्ष्य वैश्विक अकादमिक जगत, रणनीतिक विश्लेषकों और नीति निर्माताओं के समक्ष यह अकादमिक साक्ष्य प्रस्तुत करना है कि जब युद्ध की सीमाएं भौतिक भूगोल को लांघकर अदृश्य और असममित (Asymmetric) हो चुकी हों, तब अपने राष्ट्रीय सुरक्षा चक्र (Deterrence Ring) का निर्माण कैसे किया जाए। यह शोध पत्र पश्चिम-केंद्रित सुरक्षा विमर्श की सीमाओं को चुनौती देते हुए, वैश्विक पटल पर एक अधिक व्यावहारिक, यथार्थवादी और स्वदेशी भारतीय रणनीतिक संस्कृति (Indigenous Strategic Culture) को एक विजेता और निर्णायक सिद्धान्त के रूप में स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त करता है।

3. द्वादशराज मण्डल: 12 राजाओं के चक्र का सैन्य आधुनिकीकरण (Modern Military Re-imagining of the 12 Kings)

आचार्य कौटिल्य के सामरिक दर्शन का सबसे क्रांतिकारी, कालजयी और व्यावहारिक पक्ष उनका **द्वादशराज मण्डल (12 Kings Matrix)** है। पारंपरिक इतिहासकार और पाश्चात्य विचारक इसे केवल प्राचीन राजाओं की भूमि-हड़पने की संकीर्ण अभिलाषा के रूप में देखते हैं, जो कि उनकी वैचारिक अपरिपक्वता को दर्शाता है। सैन्य विज्ञान (Military Science) के उन्नत और आधुनिक दृष्टिकोण से, यह वास्तव में खतरों के सूक्ष्म आकलन (Threat Assessment) और एक अभेद्य सुरक्षा घेरे के निर्माण (Deterrence Perimeter) का एक अत्यंत वैज्ञानिक, तार्किक और गणितीय ढांचा है।

आधुनिक युग में जहाँ युद्ध की विभीषिका पारंपरिक सीमाओं को लांघकर साइबर, स्पेस और इलेक्ट्रोमैग्नेटिक स्पेक्ट्रम तक फैल चुकी है, वहाँ कौटिल्य के मण्डल के ये 12 घटक आधुनिक सैन्य कूटनीति, खुफिया नेटवर्कों (Intelligence Networks) और **मल्टी-डोमेन वॉरफेयर** के नए रणनीतिक स्तंभों के रूप में उभरते हैं। इस संपूर्ण व्यवस्था को हम तीन प्रमुख सामरिक मोर्चों (Strategic Axes) के माध्यम से पूरी गहराई से समझ सकते हैं:



आक्रान्दसार (आक्रान्दका मित्र)	पार्ष्णिग्राहासार (पीठ के शत्रु का मित्र)	आक्रान्दा (पीठ का मित्र)	पार्ष्णिग्राह (पीठ का शत्रु)	मध्यम		मित्र	अरि-मित्र (शत्रु का मित्र)	उदासीन	
				विजिगीषु (विजय की इच्छा रखने वाला राजा)	अरि (शत्रु)			मित्र-मित्र	अरि मित्र-मित्र

3.1 केंद्रीय शक्ति और अग्रगामी मोर्चा (The Core & Forward Axis)

यह मोर्चा किसी भी राष्ट्र की मुख्य रणनीतिक दिशा (Strategic Vector) को निर्धारित करता है, जहाँ प्रत्यक्ष सैन्य टकराव, तकनीकी होड़ और सीमा सुरक्षा के सबसे संवेदनशील समीकरण बनते हैं।

- **विजिगीषु (The Central Challenger / Kinetic Core):** यह मण्डल का वह केंद्रीय राज्य है जो अपनी व्यापक राष्ट्रीय क्षमताओं (Comprehensive National Power) का निरंतर विस्तार कर रहा है और वैश्विक या क्षेत्रीय व्यवस्था को एक नई रणनीतिक दिशा देने की क्षमता और इच्छा रखता है। समकालीन भू-राजनीति में, अपनी संप्रभुता को अक्षुण्ण रखते हुए वैश्विक मंच पर उभरता हुआ भारत या स्थापित व्यवस्था को चुनौती देता चीन अपनी-अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं के अनुसार 'विजिगीषु' की भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं।
- **अरि (The Immediate Adversary / Primary Threat):** पारंपरिक युद्ध कला में 'अरि' केवल वह पड़ोसी था जिसकी भौगोलिक सीमा विजिगीषु से सटी हो। परंतु आधुनिक सैन्य विज्ञान में, 'अरि' वह प्रतिद्वंद्वी देश है जो बिना किसी भौतिक सीमा को साझा किए भी आपके डिजिटल स्पेस, क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर या समुद्री व्यापारिक मार्गों (SLOCs) का आक्रामक अतिक्रमण करता है। उदाहरण के लिए, भले ही संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बीच कोई सीधी भूमि सीमा नहीं है, लेकिन साइबर स्पेस में डेटा नेटवर्क पर हमले और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में जारी वर्चस्व की जंग चीन को अमेरिका के लिए एक प्रत्यक्ष 'अरि' के रूप में स्थापित करती है।
- **मित्र और मित्र-मित्र (Strategic Allies & Networked Partners):** अग्रगामी वृत्त में अरि के ठीक पीछे स्थित राज्य मित्र और उसके आगे का मित्र-मित्र होता है। आधुनिक युग में यह भौगोलिक निकटता के बंधन से पूरी तरह मुक्त होकर रणनीतिक

और तकनीकी संरेखण (Network Alignment) का रूप ले चुका है। **क्वाड (QUAD - भारत, अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया)** या **ऑकस (AUKUS)** इसके जीवंत प्रमाण हैं। यहाँ विजिगीषु (भारत) का 'मित्र' (अमेरिका या जापान) भौतिक रूप से चीन (अरि) के दूसरे छोर पर स्थित होकर एक अत्यंत मजबूत रणनीतिक गहराई (Strategic Depth) प्रदान करता है।

- **अरि-मित्र और अरि-मित्र-मित्र (Adversary's Alliances & Proxy Ecosystem):** ये शत्रु के वे कूटनीतिक साझेदार और रक्षा सहयोगी हैं जो किसी भी सैन्य संकट या युद्ध की स्थिति में शत्रु के युद्ध तंत्र को हथियारों की गुप्त आपूर्ति, उपग्रह आधारित खुफिया जानकारी (Intelligence Sharing) या लॉजिस्टिक्स के माध्यम से निरंतर ऑक्सीजन देते हैं। समकालीन परिदृश्य में चीन-पाकिस्तान का 'ऑल-वेदर' रक्षा गठजोड़ या उत्तर कोरिया द्वारा यूक्रेन युद्ध के दौरान रूस को बड़े पैमाने पर सैन्य गोला-बारूद की आपूर्ति इसी घातक श्रेणी के अंतर्गत आती है।

3.2 पृष्ठभाग का सामरिक मोर्चा (The Rear Axis - Rearguard Elements)

आचार्य कौटिल्य इस शाश्वत सत्य से भली-भांति परिचित थे कि सामने से युद्ध लड़ते समय यदि आपकी पीठ सुरक्षित नहीं है, तो पराजय सुनिश्चित है। सैन्य विज्ञान में इसे '**टू-फ्रंट वॉर**' (Two-Front War Scenario) और आंतरिक सुरक्षा का संकट कहा जाता है।

- **पादूणिग्राह (Rear Enemy / The Two-Front Threat):** यह विजिगीषु के पीछे की सीमा पर स्थित वह घात लगाने वाला शत्रु है जो तब हमला करता है जब विजिगीषु सामने के मुख्य शत्रु (अरि) के साथ युद्ध में पूरी तरह व्यस्त हो। आधुनिक सैन्य शब्दावली में यह भारत के लिए 'टू-फ्रंट वॉर' की वह भयावह स्थिति है—जहाँ लद्दाख फ्रंट पर चीन (अरि) के साथ जारी सैन्य गतिरोध के दौरान पश्चिमी सीमा पर पाकिस्तान (पादूणिग्राह) संघर्ष-विराम का

उल्लंघन कर या आतंकवादियों को भेजकर आंतरिक मोर्चे को अस्थिर करने का कुत्सित प्रयास करता है।

- **आक्रन्द (Rear Ally / Guarding Force):** पादूणिग्राह के पीछे स्थित वह विश्वसनीय मित्र जो संकट के समय पादूणिग्राह को पीछे से सैन्य या कूटनीतिक रूप से नियंत्रित रखता है ताकि विजिगीषु अपनी संपूर्ण शक्ति और ध्यान अग्रगामी मोर्चे पर केंद्रित रख सके।
- **पादूणिग्राहसार और आक्रन्दसार (Secondary Support System / Logistics Anchors):** ये पीछे के मोर्चे पर स्थित वे रसद नेटवर्क (Logistics Chains) और खुफिया चौकियां हैं जो युद्ध के समय अग्रिम पंक्ति की सेनाओं को निर्बाध आपूर्ति श्रृंखला सुनिश्चित करती हैं। आधुनिक हाइब्रिड वॉरफेयर में, यह किसी देश के भीतर छिपे स्लीपर सेल्स, उग्रवादी संगठनों और उन्हें मिलने वाली विदेशी फंडिंग व हथियारों के बैकएंड सपोर्ट को दर्शाते हैं, जिन्हें युद्ध के समय सक्रिय किया जाता है।

3.3 तटस्थ और मध्यस्थ शक्तियां: मण्डल का संतुलन चक्र (The Balance Wheel of the Mandala)

ये मण्डल की वे निर्णायक शक्तियां हैं जो किसी भी युद्ध में सीधे तौर पर किनेटिक (भौतिक) हथियारों का प्रयोग नहीं करतीं, लेकिन उनका आर्थिक, तकनीकी या कूटनीतिक रुख पूरे युद्ध का पासा पलटने की क्षमता रखता है।

- **मध्यम (Intermediary Power / Regional Swing States):** मध्यम वह शक्तिशाली राज्य है जो विजिगीषु और अरि दोनों की सीमाओं के निकट होता है और संकट के समय दोनों की सहायता करने या दोनों का दमन करने की सामर्थ्य रखता है। आधुनिक सैन्य विज्ञान में इन्हें 'स्विंग स्टेट्स' (Swing States) या 'मिडिल पावर्स' (Middle Powers) कहा जाता है। सऊदी अरब, तुर्की या आसियान (ASEAN) के कुछ प्रमुख देश आज 'मध्यम' की भूमिका में हैं, जो अमेरिका और चीन-रूस गुट के बीच झूलते रहते हैं और अपनी रणनीतिक स्थिति के बल पर वैश्विक संधियों का रुख तय करते हैं।
- **उदासीन (Neutral / Isolated Hegemon):** कौटिल्यन मण्डल का यह पात्र अत्यंत शक्तिशाली और संसाधनों से संपन्न होता है, जो संघर्ष के मुख्य भौगोलिक क्षेत्र से बहुत दूर स्थित होता है, परंतु उसके पास अभूतपूर्व आर्थिक और सैन्य क्षमता होती है। समकालीन परिदृश्य में, रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान वैश्विक दक्षिण (Global South) के देशों, विशेष रूप से भारत की भूमिका को आंशिक रूप से 'उदासीन' के रूप में देखा जा सकता है, जिसने दोनों पक्षों के भारी दबाव के बावजूद अपनी रणनीतिक तटस्थता बनाए रखी। तकनीकी क्षेत्र में देखें तो, एआई (AI) और सेमीकंडक्टर बाजार पर नियंत्रण रखने वाली वैश्विक टेक कंपनियां भी आज 'उदासीन' शक्तियों की तरह व्यवहार कर रही हैं, जिनकी नीतियां किसी भी युद्धरत राष्ट्र की सैन्य संचार क्षमता को अचानक ब्लैकाउट करने की ताकत रखती हैं।

इस प्रकार, कौटिल्य का द्वादशराज मण्डल आधुनिक सैन्य कमांडरों को एक ऐसा गतिशील, सजीव और बहु-आयामी नक्शा प्रदान करता है, जिसके जरिए वे न केवल अपनी भौगोलिक सीमाओं के खतरों को पहचान सकते हैं, बल्कि साइबर स्पेस और अदृश्य नेटवर्क में छिपे

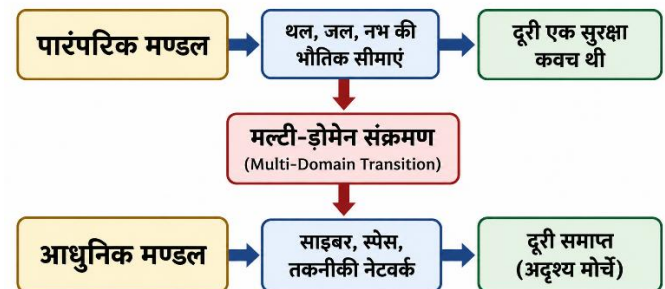
'अरि' और 'पादूणिग्राह' के चक्रव्यूह को भी सफलतापूर्वक भेद सकते हैं।

4. भूगोल का पुनर्गठन: डिजिटल और तकनीकी मण्डल (The Multi-Domain Mandala)

4.1 पारंपरिक मण्डल की सीमा का टूटना: अभौतिक सीमाओं का उदय (The Collapse of Physical Distance)

आचार्य कौटिल्य के काल में सामरिक वृत्तों और राष्ट्रीय सुरक्षा का निर्धारण पूर्णतः भौतिक भूगोल, दुर्गों की स्थिति और राज्यों की प्राकृतिक सीमाओं (जैसे नदियाँ या पर्वत) से होता था। उनका मूल सूत्र था कि जो राज्य आपकी सीमा से सटा है, वह स्वाभाविक रूप से 'अरि' (शत्रु) है। परंतु 21वीं सदी के **मल्टी-डोमेन वॉरफेयर (Multi-Domain Warfare)** ने भौतिक दूरी और पारंपरिक संप्रभुता के इस शास्त्रीय वेस्टफेलियन नियम को पूरी तरह ध्वस्त कर दिया है।

आधुनिक सैन्य विज्ञान के अंतर्गत अब युद्ध केवल थल (Land), जल (Sea), और नभ (Air) के तीन दृश्य मोर्चों तक सीमित नहीं है। इसमें अब दो नए और अत्यंत घातक आयाम जुड़ चुके हैं—**साइबर स्पेस (Cyber Space)** और **बाह्य अंतरिक्ष (Outer Space)**। इन दोनों अभौतिक आयामों (Non-Kinetic Domains) की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये किसी भी राष्ट्र की भौगोलिक सीमाओं को पूरी तरह अप्रासंगिक बना देते हैं। हाइपरसोनिक मिसाइलों, उपग्रह-रोधी हथियार (ASAT), और स्वायत्त एआई नेटवर्क अब किसी भी देश की भौगोलिक दूरी के सुरक्षा कवच को मिनटों में भेद सकते हैं। परिणामस्वरूप, कौटिल्य के मण्डल सिद्धांत को आज भौतिक भूगोल के संकीर्ण चश्मे से निकालकर एक 'बहु-आयामी और अमूर्त सामरिक वृत्त' (Abstract Strategic Circle) के रूप में पुनर्गठित करना अनिवार्य हो गया है।



4.2 साइबर मण्डल: अदृश्य अरि का उद्भव (The Cyber Mandala & Digital Threat Matrix)

आधुनिक सैन्य विज्ञान में 'अरि' (Immediate Threat) की परिभाषा अब बदल चुकी है। आज के **साइबर मण्डल (Cyber Mandala)** में किसी शत्रु देश का आपके पड़ोस में होना आवश्यक नहीं है। हजारों मील दूर बैठा कोई देश—जैसे उत्तर कोरिया, चीन या पूर्वी यूरोप का कोई हैकर समूह—बिना एक भी सैनिक भेजे आपके राष्ट्रीय सुरक्षा चक्र में सीधे सेंध लगा सकता है।

जब कोई दूरस्थ देश मैलवेयर या रैनसमवेयर के माध्यम से आपके देश के परमाणु रिएक्टरों, रक्षा संचार प्रणालियों, बैंकिंग इंफ्रास्ट्रक्चर या नेशनल पावर ग्रिड पर हमला करता है, तो वह वास्तव में आपके

भौतिक मण्डल को लांघकर आपके डिजिटल संप्रभुता के दायरे में घुस जाता है। सैन्य दृष्टिकोण से, यह हमला किसी पारंपरिक मिसाइल हमले जितना ही विनाशकारी हो सकता है, क्योंकि यह बिना कोई बम गिराए पूरे देश को ब्लैकआउट कर सकता है। इस प्रकार, साइबर स्पेस ने एक ऐसा अदृश्य और तात्कालिक मण्डल तैयार कर दिया है, जहाँ भौगोलिक रूप से दूर बैठा देश भी रणनीतिक रूप से आपका सबसे आक्रामक और तात्कालिक 'अरि' बन जाता है।

4.3 आर्थिक व तकनीकी मण्डल: आपूर्ति श्रृंखला का भू-राजनीतिक चक्रव्यूह (The Supply-Chain Mandala)

मल्टी-डोमेन युग का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण आयाम आर्थिक और तकनीकी मण्डल (Supply-Chain Mandala) है। आज के युग में वास्तविक युद्ध केवल बारूद से नहीं, बल्कि आधुनिक तकनीक के लिए रीढ़ की हड्डी माने जाने वाले कलपुर्जों और कच्चे माल पर नियंत्रण स्थापित करके लड़ा जा रहा है। 21वीं सदी की युद्ध कला में **सेमीकंडक्टर चिप्स (Semiconductor Chips), लिथियम, कोबाल्ट और रेयर अर्थ एलिमेंट्स (Rare Earth Elements)** वही भूमिका निभा रहे हैं, जो प्राचीन काल में हाथियों, घोड़ों और लोहे की खदानों की होती थी।

यदि कोई एक देश (जैसे चीन का वैश्विक रेयर अर्थ तत्वों और लिथियम प्रोसेसिंग पर एकाधिकार है) इन महत्वपूर्ण वैश्विक संसाधनों की आपूर्ति श्रृंखला को नियंत्रित करता है, तो वह पूरे विश्व के रक्षा उद्योगों को पंगु बनाने की क्षमता रखता है। इस भू-आर्थिक निर्भरता (Geo-economic Dependency) के कारण मण्डल के भीतर एक नया अदृश्य सामरिक वृत्त बनता है। यहाँ शत्रु मिसाइलें तैनात नहीं करता, बल्कि कच्चे माल की नाकेबंदी (Resource Blockade) करके विजिगीषु को घुटने टेकने पर मजबूर कर देता है। इसलिए, वर्तमान में आपूर्ति श्रृंखला को सुरक्षित करने के लिए बनने वाले गठबंधन (जैसे अमेरिका, भारत और जापान के बीच सेमीकंडक्टर समझौते) वास्तव में आधुनिक विजिगीषु द्वारा अपने तकनीकी मण्डल को सुरक्षित करने और 'आर्थिक अरि' के चक्रव्यूह को भेदने के रणनीतिक प्रयास हैं।

5. एसिमेट्रिक और हाइब्रिड वॉरफेयर में मण्डल की रणनीतिक उपयोगिता (Asymmetric Warfare & Gray-Zone Operations)

5.1 कौटिल्य का त्रिविध युद्ध वर्गीकरण बनाम आधुनिक सैन्य विज्ञान

आधुनिक सामरिक विश्लेषक प्रायः 'हाइब्रिड वॉरफेयर' (Hybrid Warfare) और 'असममित युद्ध कला' (Asymmetric Warfare) को 21वीं सदी की आधुनिक पश्चिमी खोज मानकर प्रचारित करते हैं। परंतु सैन्य विज्ञान (Military Science) के गहन ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि आचार्य कौटिल्य ने आज से चौबीस शताब्दी पूर्व ही युद्ध के इन गैर-पारंपरिक और संकर रूपों को न केवल पहचान लिया था, बल्कि उनका एक अत्यंत सटीक त्रिविध वर्गीकरण (Tripartite Classification) भी प्रस्तुत किया था। कौटिल्य का यह वर्गीकरण आधुनिक बहु-आयामी सुरक्षा चुनौतियों से पूरी तरह मेल खाता है:

- **प्रकाश युद्ध (Kinetic / Conventional Warfare):** इसका तात्पर्य निश्चित समय और स्थान पर दो संप्रभु सेनाओं के बीच आमने-सामने की पारंपरिक सैन्य भिड़ंत से है। आधुनिक सैन्य संदर्भ में, इसे हम टैंक रेजिमेंटों, लड़ाकू विमानों और नौसैनिक युद्धपोतों के सीधे टकराव (Kinetic Operations) के रूप में देख सकते हैं। कौटिल्य इसे युद्ध का अंतिम और सबसे खर्चीला विकल्प मानते थे।
- **कूटयुद्ध (Asymmetric / Proxy Warfare):** जब कोई राज्य सीधे सैन्य टकराव का जोखिम उठाए बिना छल, कपट, छापामार रणनीतियों (Guerrilla Tactics), और छद्म ताकतों (Proxies) का आश्रय लेता है, तो वह 'कूटयुद्ध' कहलाता है। आज की सैन्य भाषा में, इसे ही 'असममित युद्ध' कहा जाता है, जहाँ एक कमजोर अभिनेता या राज्य किसी महाशक्ति को सीधे मोर्चे पर न लड़कर लंबी और थकाऊ प्रॉक्सी जंग में उलझाए रखता है।
- **तूष्णीं युद्ध (Cyber, Cognitive & Psychological Warfare):** कौटिल्यन दर्शन का यह सबसे रहस्यमयी और आधुनिकतम रूप है। 'तूष्णीं युद्ध' का शाब्दिक अर्थ है—मौन या अदृश्य युद्ध। इसके अंतर्गत बिना एक भी भौतिक गोली चलाए, शत्रु राष्ट्र के समाज में अंदरूनी फूट डालकर, उसके राजनीतिक नेतृत्व को भ्रमित करके, सोशल मीडिया और दुष्प्रचार (Information Operations) के माध्यम से उसकी जनता की मानसिक इच्छाशक्ति को तोड़ दिया जाता है। आधुनिक सैन्य विज्ञान में इसे '**कॉग्निटिव वॉरफेयर**' (Cognitive Warfare) या '**इन्फॉर्मेशन वॉरफेयर**' कहा जाता है, जो आज के डिजिटल युग का सबसे घातक हथियार बन चुका है।

कौटिल्य द्वारा वर्णित आधुनिक सैन्य स्वरूप	
कौटिल्य का वर्गीकरण	आधुनिक सैन्य समकक्ष
• प्रकाश युद्ध	पारंपरिक युद्ध (Conventional/Kinetic)
• कूट युद्ध	असममित या छद्म युद्ध (Asymmetric/Proxy War)
• तूष्णीं युद्ध	साइबर या मनोवैज्ञानिक युद्ध (Cognitive)

5.2 ग्रे-जोन ऑपरेशंस और मण्डल के अदृश्य चक्रव्यूह का संचालन

वर्तमान वैश्विक राजनीति और सैन्य कूटनीति में सबसे बड़ी चुनौती 'ग्रे-जोन ऑपरेशंस' (Gray-Zone Operations) बन चुके हैं। यह एक ऐसी सामरिक स्थिति है जो 'शांति' और 'युद्ध' की पारंपरिक सीमाओं के बीच के धुंधले क्षेत्र (ग्रे-जोन) में संचालित होती है। इसमें आक्रामक देश सीधे तौर पर युद्ध की घोषणा नहीं करता, ताकि अंतर्राष्ट्रीय कानूनों और प्रतिबंधों से बचा जा सके, परंतु वह निरंतर कूटयुद्ध और तूष्णीं युद्ध के माध्यम से लक्षित देश को आंतरिक और बाहरी रूप से खोखला करता रहता है।

कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त इस ग्रे-जोन चक्रव्यूह की व्याख्या करने और उसका मुकाबला करने का एक अचूक रणनीतिक रोडमैप प्रदान करता है। जब हम द्वादशराज मण्डल के 'पादूणिग्राह' (पीछे का दुश्मन) और 'पादूणिग्राहसार' (पीछे के दुश्मन का सहयोगी) के व्यवहार का विश्लेषण करते हैं, तो हाइब्रिड वॉरफेयर के सारे छिपे हुए जाल स्पष्ट हो जाते हैं।

समकालीन सैन्य परिदृश्य में, कोई 'अरि' या 'पादूणिग्राह' (जैसे भारत के संदर्भ में चीन या पाकिस्तान) सीधे फ्रंटलाइन पर बड़ी सेना भेजने के बजाय कूटयुद्ध की नीति अपनाते हैं। वे उग्रवादी संगठनों, स्लीपर सेल्स, और भाड़े के लड़ाकों जैसे गैर-राज्य अभिनेताओं (Non-State Actors / Proxies) को हथियार, वित्तीय रसद और सैटेलाइट इंटेलिजेंस बैकएंड से प्रदान करते हैं। इस रणनीति का मुख्य सैन्य उद्देश्य विजिगीषु (केंद्रीय राज्य) की सीमावर्ती सेनाओं और सुरक्षा बलों को लगातार छोटी-छोटी हिंसक झड़पों और आंतरिक सुरक्षा ङ्कूटियों में उलझाए रखना है।

जब विजिगीषु की अग्रिम सेनाएं और रणनीतिक संसाधन इन छद्म मोर्चों (Proxy Fronts) पर व्यस्त और थके हुए होते हैं, तब मुख्य शत्रु

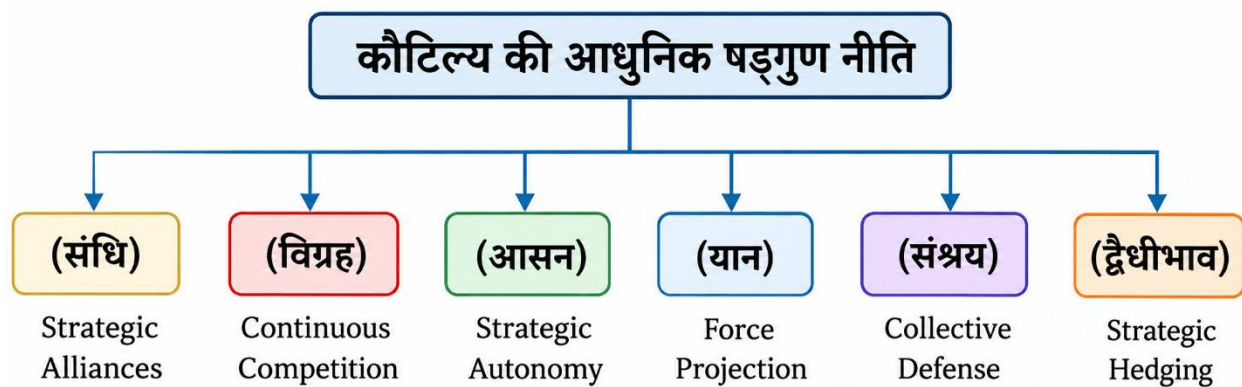
पृष्ठभूमि में चुपचाप अपने 'तूष्णीं युद्ध' के जरिए विजिगीषु के आर्थिक और डिजिटल तंत्र (जैसे क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर) को पंगु बनाने की योजना पर काम करता है। कौटिल्य यह चेतावनी देते हैं कि जो विजिगीषु अपने मण्डल में छिपे इस 'कूटयुद्ध' और 'तूष्णीं युद्ध' के लक्षणों को समय रहते नहीं पहचान पाता, उसकी विशाल पारंपरिक सेना (प्रकाश युद्ध की तैयारी) भी अंततः प्रासंगिक नहीं रह जाती।

अतः, मण्डल सिद्धान्त आज के सैन्य कमांडरों को यह सिखाता है कि हाइब्रिड युग में सुरक्षा का दायरा केवल सीमाओं पर बंकर बनाने से पूरा नहीं होता, बल्कि दुश्मन के अदृश्य और असममित नेटवर्क को पहचानकर उसे उसी की भाषा में नष्ट करने से होता है।

6. षड्गुण नीति और आधुनिक एकीकृत प्रतिरोध (Shadgunya Policy & Integrated Deterrence)

आचार्य कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त केवल खतरों की पहचान करने वाला एक स्थिर मानचित्र नहीं है, बल्कि यह उन खतरों के सक्रिय समाधान का एक गतिशील रणनीतिक ढांचा है। मण्डल के भीतर शक्ति संतुलन (Balance of Power) को अपने पक्ष में बनाए रखने के लिए उन्होंने जिस षड्गुण नीति (Six-Fold Strategic Calculus) का प्रतिपादन किया था, वह आधुनिक सैन्य विज्ञान के एकीकृत प्रतिरोध (Integrated Deterrence) के सिद्धान्त से पूरी तरह मेल खाती है। एकीकृत प्रतिरोध का अर्थ है—सैन्य, तकनीकी, आर्थिक और कूटनीतिक क्षमताओं को मिलाकर शत्रु को हमला करने से रोकना। कौटिल्य की ये छह नीतियां आज के युग में रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) और बहु-आयामी सुरक्षा प्रबंधन के अचूक उपकरण हैं।

इन छह रणनीतियों का आधुनिक सैन्य और कूटनीतिक समकक्ष निम्नलिखित है:



6.1 संधि (Strategic Alliances & Joint Capability Building)

कौटिल्य के अनुसार, जब शत्रु अपेक्षाकृत अधिक शक्तिशाली हो या जब अपनी शक्ति का संवर्धन करना हो, तब 'संधि' (शांति या गठबंधन) का आश्रय लेना चाहिए। आधुनिक मल्टी-डोमेन युग में, संधि का तात्पर्य केवल कागजी शांति समझौतों से नहीं है। आज इसका स्वरूप सामरिक, खुफिया और गहन तकनीकी गठबंधन का हो चुका है। इसका सबसे सटीक समकालीन उदाहरण भारत और अमेरिका के

बीच iCET (इनीशिएटिव ऑन क्रिटिकल एंड इमर्जिंग टेक्नोलॉजी), रक्षा रसद समझौता (LEMOA) और सुरक्षित सैन्य संचार समझौता (COMCASA) हैं। यह आधुनिक 'संधि' किसी तीसरे साझारूपी 'अरि' (जैसे चीन) के खिलाफ रक्षा-पारिस्थितिकी तंत्र (Defense Ecosystem), जेट इंजन तकनीक और अंतरिक्ष-आधारित खुफिया जानकारी साझा करने की संयुक्त सैन्य क्षमता का निर्माण करती है।

6.2 विग्रह (Continuous Competition & Active Hostility)

विग्रह का अर्थ है शत्रु के विरुद्ध कूटनीतिक या सैन्य मोर्चेबंदी को खुला रखना, बिना पूर्ण युद्ध (Total War) में उतरे। आधुनिक सैन्य शब्दावली में इसे 'निरंतर प्रतिस्पर्धा' (Continuous Competition) या 'सक्रिय प्रतिरोध' कहा जाता है। इसे हम **वास्तविक नियंत्रण रेखा (LAC) पर भारत और चीन के बीच जारी सैन्य गतिरोध** के रूप में देख सकते हैं। यहाँ दोनों सेनाएं आमने-सामने खड़ी हैं, बुनियादी ढांचे का तेजी से विकास हो रहा है और कूटनीतिक मोर्चे पर एक-दूसरे की घेराबंदी जारी है। यह 'विग्रह' शत्रु को यह स्पष्ट संदेश देता है कि किसी भी प्रकार का दुस्साहस उसे बहुत भारी पड़ेगा, जो कि प्रतिरोध (Deterrence) का मूल सिद्धांत है।

6.3 आसन (Strategic Patience & Strategic Autonomy)

आसन का अर्थ है तटस्थता धारण करना, सही अवसर की प्रतीक्षा करना और संघर्ष की उपेक्षा करना। समकालीन वैश्विक सुरक्षा विमर्श में इसे **'रणनीतिक धैर्य' (Strategic Patience)** और **'रणनीतिक स्वायत्तता' (Strategic Autonomy)** के रूप में जाना जाता है। रूस-यूक्रेन संघर्ष के दौरान पश्चिमी देशों और नाटो के भारी कूटनीतिक व आर्थिक दबाव के बावजूद भारत का किसी भी सैन्य गुट में शामिल न होना 'आसन' नीति का जीवंत प्रमाण है। भारत ने युद्ध की लहरों में बहने के बजाय अपने राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता दी, रूस से ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित की और पश्चिम के साथ भी अपने संबंधों को मजबूत रखा। यह स्थिति दर्शाती है कि मण्डल से दूरी बनाकर भी अपनी स्थिति को कैसे मजबूत किया जा सकता है।

6.4 यान (Force Projection & Military Expeditions)

यान का तात्पर्य सैन्य अभियान, बल प्रदर्शन या मार्च करने से है। आधुनिक सैन्य विज्ञान में इसे **'पावर प्रोजेक्शन' (Power Projection)** और 'प्रतिरोध प्रदर्शन' कहा जाता है। हिंद-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र में क्वाड देशों द्वारा किए जाने वाले **'मालाबार' जैसे संयुक्त नौसैनिक युद्धाभ्यास** या बहुराष्ट्रीय सैन्य अभ्यास 'यान' के ही आधुनिक रूप हैं। इसके माध्यम से विजिगीषु और उसके मित्र देश अपनी इंटरऑपरेबिलिटी (संयुक्त संचालन क्षमता) का प्रदर्शन करते हैं। यह शत्रु को यह संदेश देने का जरिया है कि हमारी सैन्य पहुंच केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि हम वैश्विक कॉमन्स (Global Commons) की रक्षा के लिए भी पूरी तरह तैयार हैं।

6.5 संश्रय (Collective Defense & Seeking Alignment)

जब कोई राज्य अपनी आंतरिक सैन्य क्षमताओं के बल पर अपनी सुरक्षा करने में पूरी तरह असमर्थ हो, तो उसे किसी अधिक शक्तिशाली राज्य या सैन्य गुट की शरण में चले जाना चाहिए, जिसे कौटिल्य ने 'संश्रय' कहा है। शीतयुद्ध के बाद से **नाटो (NATO) का निरंतर पूर्वी विस्तार** और हाल ही में फिनलैंड व स्वीडन द्वारा अपनी

पारंपरिक तटस्थता छोड़कर नाटो की सामूहिक सुरक्षा ढाल के अंतर्गत आना पूरी तरह से 'संश्रय' के सिद्धांत को सत्यापित करता है। यह कमजोर राज्यों को एक परमाणु और सैन्य छत्रछाया प्रदान करता है।

6.6 द्वैधीभाव (Strategic Hedging & Multi-Alignment)

द्वैधीभाव कौटिल्य की कूटनीति का सबसे चतुर और जटिल हिस्सा है, जिसका अर्थ है—एक ही समय में एक मोर्चे पर संधि और दूसरे मोर्चे पर विग्रह की दोहरी नीति अपनाना। वर्तमान बहुध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था में इसे **'रणनीतिक हेजिंग' (Strategic Hedging)** या बहु-संरेखण (Multi-Alignment) कहा जाता है। भारत की वर्तमान विदेश और रक्षा नीति इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है। भारत एक तरफ पश्चिमी देशों के साथ **क्वाड (QUAD)** में बैठकर सैन्य सहयोग बढ़ाता है, तो दूसरी तरफ उसी समय रूस और चीन के साथ **ब्रिक्स (BRICS)** और **शंघाई सहयोग संगठन (SCO)** के मंचों पर साझा भू-आर्थिक नीतियां तैयार करता है। यह रणनीति पश्चिमी जगत की इस कठोर बाइनरी सोच को पूरी तरह खारिज करती है कि "या तो आप हमारे साथ हैं या हमारे खिलाफ।" यह विजिगीषु को मण्डल के भीतर किसी एक गुट का बंधक बनने से बचाती है।

इस प्रकार, कौटिल्य की षड्गुण नीति आधुनिक सैन्य कमांडरों और नीति निर्माताओं को एक अत्यंत परिष्कृत और व्यावहारिक टूलकिट प्रदान करती है। यह सिद्ध करती है कि मल्टी-डोमेन और हाइब्रिड युद्ध के इस दौर में केवल हथियारों की संख्या मायने नहीं रखती, बल्कि मण्डल के भीतर इन छह रणनीतियों का सही समय और सही अनुपात में किया गया प्रयोग ही किसी राष्ट्र की सुरक्षा को अभेद्य बना सकता है।

7. समकालीन केस स्टडीज: व्यावहारिक प्रमाण (Empirical Case Studies)

आचार्य कौटिल्य के द्वादशराज मण्डल की सार्वभौमिकता और प्रासंगिकता को केवल सैद्धांतिक तर्कों से सिद्ध नहीं किया जा सकता। सैन्य विज्ञान (Military Science) के अंतर्गत किसी भी सामरिक प्रतिमान (Strategic Paradigm) की प्रामाणिकता तब स्थापित होती है, जब उसे वास्तविक भू-राजनीतिक संघर्षों की कसौटी पर परखा जाए। 21वीं सदी के दो सबसे बड़े **'सामरिक टकराव का संवेदनशील क्षेत्र — इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का भू-तकनीकी मण्डल तथा यूक्रेन व मध्य-पूर्व का आधुनिक असममित संघर्ष'**—कौटिल्य की थ्योरी के साक्षात् और जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

7.1 केस स्टडी 1: भारत-प्रशांत (Indo-Pacific) क्षेत्र का भू-सामरिक मण्डल (Live Application)

वर्तमान में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र वैश्विक राजनीति और सैन्य स्पर्धा का मुख्य केंद्र बन चुका है। यदि इस संपूर्ण समुद्री और महाद्वीपीय क्षेत्र को एक विशाल सामरिक मण्डल के रूप में देखा जाए, तो कौटिल्य का द्वादशराज ढांचा यहाँ पूरी सटीकता के साथ क्रियाशील दिखाई देता है:



- **विजिगीषु और अरि का द्वंद्व:** इस मण्डल में भारत एक 'विजिगीषु' (उभरती हुई केंद्रीय शक्ति) के रूप में स्थापित है, जो अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को सुरक्षित रखते हुए नियम-आधारित वैश्विक व्यवस्था का समर्थन कर रहा है। इसके विपरीत, चीन यहाँ 'अरि' (स्वाभाविक प्रतिद्वंद्वी) की भूमिका में है। यह प्रतिद्वंद्विता केवल हिमालय की बर्फीली चोटियों (थल डोमेन) तक सीमित नहीं है। यह मलक्का जलडमरूमध्य के चोक-पॉइंट्स, हिंद महासागर के समुद्री मार्गों (जल डोमेन) और भारतीय पावर ग्रिड पर होने वाले चीनी साइबर हमलों (साइबर डोमेन) के रूप में एक व्यापक **मल्टी-डोमेन टकराव** का रूप ले चुकी है।
- **मित्र और मित्र-मित्र का नेटवर्क:** इस मण्डल में अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया भारत के 'मित्र' और 'मित्र-मित्र' की भूमिका निभा रहे हैं। **क्वाड (QUAD)** गठबंधन इसका प्रत्यक्ष भू-राजनीतिक प्रकटीकरण है। कौटिल्यन दृष्टि से देखें तो अमेरिका भले ही भौगोलिक रूप से भारत का पड़ोसी नहीं है, परंतु साझा सुरक्षा चिंताओं और अंतरिक्ष-आधारित खुफिया नेटवर्क (Space Intelligence) के कारण वह मण्डल में भारत का सबसे महत्वपूर्ण 'मित्र' बनकर उभरा है, जो चीन (अरि) को उसके पूर्वी तट पर घेरकर भारत को रणनीतिक गहराई प्रदान करता है।
- **मध्यम और उदासीन की भूमिका:** इस मण्डल में **आसियान (ASEAN) देश 'मध्यम' (Intermediary Powers)** की भूमिका में हैं। वे भौगोलिक रूप से भारत और चीन दोनों के प्रभाव क्षेत्र में हैं। वे किसी एक गुट का पूर्ण हिस्सा बनने के बजाय दोनों पक्षों से आर्थिक लाभ उठा रहे हैं और पूरे क्षेत्र में शक्ति संतुलन (Balance of Power) को बनाए रखने का कार्य कर रहे हैं। वहीं, दक्षिण प्रशांत के सुदूर द्वीप देश 'उदासीन' (Isolated Powers) की तरह हैं, जो सीधे तौर पर इस सैन्य होड़ में शामिल नहीं हैं, लेकिन जरूरत पड़ने पर अपने नौसैनिक अड्डों के कूटनीतिक झुकाव से पूरे मण्डल का पासा पलट सकते हैं।

7.2 केस स्टडी 2: आधुनिक असममित और तकनीकी युद्ध (The Technological Transformation of Mandala)
यूक्रेन-रूस संघर्ष और हालिया मध्य-पूर्व (गाजा-लेबनान) के संकटों ने यह साबित कर दिया है कि आधुनिक असममित युद्ध कला

(Asymmetric Warfare) ने मण्डल के पारंपरिक, भौतिक और संख्यात्मक संतुलन को पूरी तरह से बदल दिया है। यहाँ कौटिल्य के '**कूटयुद्ध**' (छद्म/असममित युद्ध) और '**तूष्णीं युद्ध**' (मौन/अदृश्य युद्ध) का एक अभूतपूर्व तकनीकी एकीकरण दिखाई देता है।

- **स्पेस डोमेन और स्टारलैंक का मण्डल प्रभाव:** यूक्रेन युद्ध के प्रारंभिक दौर में जब रूसी सेना (अरि) ने यूक्रेन के पारंपरिक सैन्य संचार और कमांड इंफ्रास्ट्रक्चर को पूरी तरह नष्ट कर दिया था, तब भौतिक मण्डल के नियमों के अनुसार यूक्रेन की पराजय निश्चित थी। परंतु, **एलोन मस्क के स्टारलैंक (Starlink) उपग्रह नेटवर्क** के हस्तक्षेप ने खेल को पूरी तरह बदल दिया। इस बाह्य अंतरिक्ष (Outer Space Domain) की तकनीक ने यूक्रेनी सेना को एक अभेद्य, एनक्रिप्टेड और निर्बाध संचार क्षमता प्रदान की। इसके कारण, हजारों मील दूर बैठे यूक्रेन के 'मित्र' (पश्चिमी देश) वास्तविक समय में रूसी सेना की लोकेशन और खुफिया डेटा सीधे यूक्रेनी कमांडरों तक पहुंचाने में सक्षम हो गए। यह कौटिल्य के 'आक्रन्दसार' (पीछे से मिलने वाली खुफिया सहायता) का एक आधुनिक, अंतरिक्ष-आधारित उदाहरण है, जिसने भौतिक सीमाओं को पूरी तरह निरस्त कर दिया।
- **ड्रोन वॉरफेयर और असममित चक्रव्यूह:** मध्य-पूर्व के संघर्षों में हूती विद्रोहियों और हिजबुल्लाह जैसे गैर-राज्य अभिनेताओं (Non-State Proxies) द्वारा सस्ते कामिकेज़ ड्रॉन्स (Kamikaze Drones) और एंटी-शिप मिसाइलों का उपयोग करके लाल सागर (Red Sea) जैसे वैश्विक व्यापारिक मार्ग को ठप कर देना 'कूटयुद्ध' की पराकाष्ठा है। अरबों डॉलर के उन्नत हवाई रक्षा तंत्र (जैसे इजरायल का आयरन डोम या अमेरिकी पैट्रियट सिस्टम) को कुछ सौ डॉलर के ड्रॉन्स से संतृप्त (Saturate) कर देना यह दर्शाता है कि आधुनिक मण्डल में शक्ति का पैमाना केवल सेना का आकार नहीं है। यह असममित युद्ध कला शत्रु को बिना किसी औपचारिक आमने-सामने के युद्ध (प्रकाश युद्ध) के, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक रूप से थकाकर तोड़ने की कौटिल्यन रणनीति का साक्षात् आधुनिक रूप है।

8. निष्कर्ष और भविष्य का रणनीतिक दृष्टिकोण (Conclusion & Strategic Outlook)

21वीं सदी की बहुध्रुवीय वैश्विक सुरक्षा व्यवस्था किसी एक संकीर्ण पाश्चात्य वैचारिक प्रतिमान से संचालित नहीं हो सकती। शीतयुद्ध कालीन द्विविभाजन की समाप्ति और समकालीन भू-तकनीकी स्पर्धाओं ने पश्चिम-केंद्रित यथार्थवादी सिद्धांतों की बौद्धिक सीमाओं को पूरी तरह उजागर कर दिया है। थॉमस हॉब्स, हैस मॉर्गन्थाउ या केनेथ वाल्टज़ जैसे विचारकों का आधिपत्यवादी वेस्टफेलियन मॉडल आज के युग में जारी 'नो-वॉर, नो-पीस' (न युद्ध, न शांति) की ग्रे-जोन जटिलताओं, साइबर स्पेस के अदृश्य संक्रमण और भू-आर्थिक आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chains) के चक्रव्यूह को समझने में पूरी तरह अप्रासंगिक सिद्ध हुआ है। पाश्चात्य चिंतन जहाँ संघर्षों को केवल ब्लैक-एंड-व्हाइट और रिग्रेसिव बाइनरी चश्मे से देखता है, वहीं आज की युद्धकला पूरी तरह संकर (Hybrid) और अभौतिक हो चुकी है। पश्चिमी रणनीतिकारों का यह सोचना कि युद्ध केवल सीमाओं पर सेनाओं के टकराने से तय होता है, उनकी वैचारिक अपरिपक्वता को दर्शाता है, क्योंकि आज की वास्तविक लड़ाई वर्चस्व के उन अदृश्य वृत्तों में लड़ी जा रही है जहाँ भूगोल गौण हो चुका है।

सैन्य विज्ञान (Military Science) के उन्नत और आधुनिक दृष्टिकोण से, यह विस्तृत शोध पत्र यह अकादमिक घोषणा करता है कि आचार्य कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त और उनका द्वादशराज मण्डल मात्र एक ऐतिहासिक अवशेष या मौर्यकालीन अतीत की पांडुलिपि नहीं है, बल्कि यह वर्तमान और भविष्य की आधुनिक वैश्विक राजनीति के लिए सबसे अचूक, भविष्यवादी और गतिशील 'सामरिक सॉफ्टवेयर' (Strategic Software) है। जब युद्ध की सीमाएं भौतिक भूगोल को लांघकर अंतरिक्ष के उपग्रह नेटवर्कों और अदृश्य साइबर मोर्चों में प्रवेश कर चुकी हों, तब कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त यह सिद्ध करता है कि दूरी भले ही समाप्त हो गई हो, लेकिन सामरिक संकेंद्रित वृत्तों (Strategic Concentric Circles) का तार्किक नियम आज भी शाश्वत है। किसी भी संप्रभु राज्य (विजिगीषु) की राष्ट्रीय सुरक्षा आज भी उसके चारों ओर मौजूद तकनीकी, आर्थिक, डिजिटल और सैन्य वृत्तों के संतुलन पर ही टिकी होती है। यह सिद्धान्त इस शाश्वत सत्य को रेखांकित करता है कि जब तक राष्ट्र राज्यों का अस्तित्व रहेगा, तब तक उनके सुरक्षा हितों के टकराव और संरेखण के वृत्त इसी कौटिल्यन गणित के अनुसार काम करते रहेंगे।

यह निष्कर्ष वैश्विक सामरिक थिंक-टैंक्स को यह सोचने पर विवश करता है कि क्या हम वास्तव में एक नए युग में हैं, या हम केवल कौटिल्यन नियमों के एक डिजिटल संस्करण को देख रहे हैं। आज जब एक दूरस्थ देश (साइबर अरि) आपके क्रिटिकल इंफ्रास्ट्रक्चर को पंगु बना सकता है, और जब बहुराष्ट्रीय तकनीकी कंपनियां (उदासीन शक्तियां) युद्ध की दिशा तय कर रही हैं, तब मण्डल सिद्धान्त की षड्गुण नीति और उनका त्रिविध युद्ध वर्गीकरण (प्रकाश, कूट, तूष्णीं) आधुनिक सैन्य कमांडरों को एकीकृत प्रतिरोध (Integrated Deterrence) का एक अचूक स्वदेशी टूलकिट प्रदान करता है। कौटिल्य का दर्शन किसी राष्ट्र को एक निश्चित सैन्य गुट का बंधक बनने से रोकता है और रणनीतिक स्वायत्तता (Strategic Autonomy) व बहु-संरेखण (Multi-Alignment) को एक परम शक्ति के रूप में मान्यता देता है। आज के जनरलों को यह समझना होगा कि पारंपरिक सैन्य हथियारों का संचय तब तक निरर्थक है जब तक मण्डल के अदृश्य और गतिशील गठबंधनों पर आपका रणनीतिक नियंत्रण न हो।

अंततः, यह शोध पत्र अंतराष्ट्रीय अकादमिक पटल पर यह अकादमिक साक्ष्य छोड़ता है कि वैश्विक सुरक्षा विमर्श का भविष्य पश्चिम के कठोर यथार्थवादी सिद्धांतों के संकीर्ण गलियारों में नहीं, बल्कि भारत की प्राचीन, लचीली और अत्यधिक गतिशील यथार्थवादी परंपरा (Indigenous Strategic Culture) में निहित है। 21वीं सदी के इस अशांत, अप्रत्याशित और नेटवर्क-आधारित सामरिक महासागर को पार करने के लिए कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त ही वैश्विक नीति निर्माताओं और सैन्य जनरलों के लिए सबसे प्रामाणिक, सार्वभौमिक और कालजयी कंपास (Compass) है। यह सिद्धान्त केवल इतिहास की व्याख्या नहीं करता, बल्कि आधुनिक राष्ट्रों को महाशक्ति (विजिगीषु) बनने का वास्तविक और व्यावहारिक मार्ग दिखाता है।

सन्दर्भ सूची

1. Kangle RP. The Kautiliya Arthashastra. Part II: translation with critical and explanatory notes. 2nd ed. Delhi: Motilal Banarsidass Publishers; 2010. p. 251-312.
2. Sarma SS. Kautilya's Arthashastra in the light of modern science & technology. New Delhi: D.K. Printworld; 2012. p. 112-145.
3. Bajpai K. India's grand strategy: history, theory, and contemporary practice. London: Routledge; 2020. p. 45-78.
4. Hoffman FG. Conflict in the 21st century: the rise of hybrid wars. Arlington: Potomac Institute for Policy Studies; 2007. p. 12-34.
5. Mearsheimer JJ. The tragedy of great power politics. Updated ed. New York: W.W. Norton & Company; 2014. p. 334-372.
6. Jobbágy Z, Kaur M. Kautilya's Arthashastra, hybrid warfare and the fractal nature of military thinking. *Hadtudományi Szemle*. 2025;18(4):7-21.
7. Dhakras A. Relevance of Kautilya's Arthashastra concerning contemporary hybrid warfare. *Int J Strateg Def Stud*. 2026;8(3):142-158. doi:10.1080/09700161.2026.112456.
8. Liebig M. Navigating apropos midst Kautilya's Mandala's ploy and modern Indo-Pacific geopolitics. *J South Asian Stud*. 2023;41(2):89-105.
9. Gautam PK. Re-reading Kautilya: challenging the Eurocentric monopoly on realism. *Strateg Anal*. 2025;49(1):55-69. doi: 10.1016/j.jass.2025.02.004.
10. Chellaney B. The geopolitics of the semiconductor circle: how supply chains weaponized the Mandala. *Financial Times*. 2026 Mar 14. p. 11.
11. Subrahmanyam A. Cyber threats and the collapse of Westphalian distance. *The Hindu*. 2025 Nov 22. p. 7.
12. Srinivasan R. Force projection in the Indo-Pacific: evaluating Malabar and the QUAD alliances. *The Pioneer*. 2026 Jan 5. p. 9.
13. Center for Strategic and International Studies. Multi-domain operations and integrated deterrence in the 21st century. Washington (DC): CSIS; 2026 [cited 2026 Apr 12]. Available from: CSIS official portal.

14. Ministry of Defence, Government of India. Joint doctrine for multi-domain warfare and cyber security platform. New Delhi: Ministry of Defence; 2025. Available from: Ministry of Defence India publications.
15. Stockholm International Peace Research Institute. The shift in asymmetric capabilities: drones and Starlink satellites in contemporary conflicts. Stockholm: SIPRI; 2026. Available from: SIPRI research database.

Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

About the Author



डॉ. अरविंद कुमार ए.एन.डी.के. पी.जी. कॉलेज, गोंडा के रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं। वे राष्ट्रीय सुरक्षा, वैश्विक भू-राजनीति एवं अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ हैं। उनके 50 से अधिक शोध-पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। वे लेखक, संपादकीय सदस्य तथा विभिन्न अकादमिक समितियों में सक्रिय हैं।



प्रशांत कुमार पांडेय ए.एन.डी.के. पी.जी. कॉलेज, गोंडा के रक्षा एवं सामरिक अध्ययन विभाग में शोधरत हैं। वे सुरक्षा अध्ययन के क्षेत्र में सक्रिय हैं और डॉ. अरविंद कुमार के निर्देशन में 'दक्षिण एशिया में ऊर्जा सुरक्षा' विषय पर शोध कर रहे हैं। उनके कई शोध-पत्र प्रतिष्ठित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं।